Various Dimensions of Social Culture

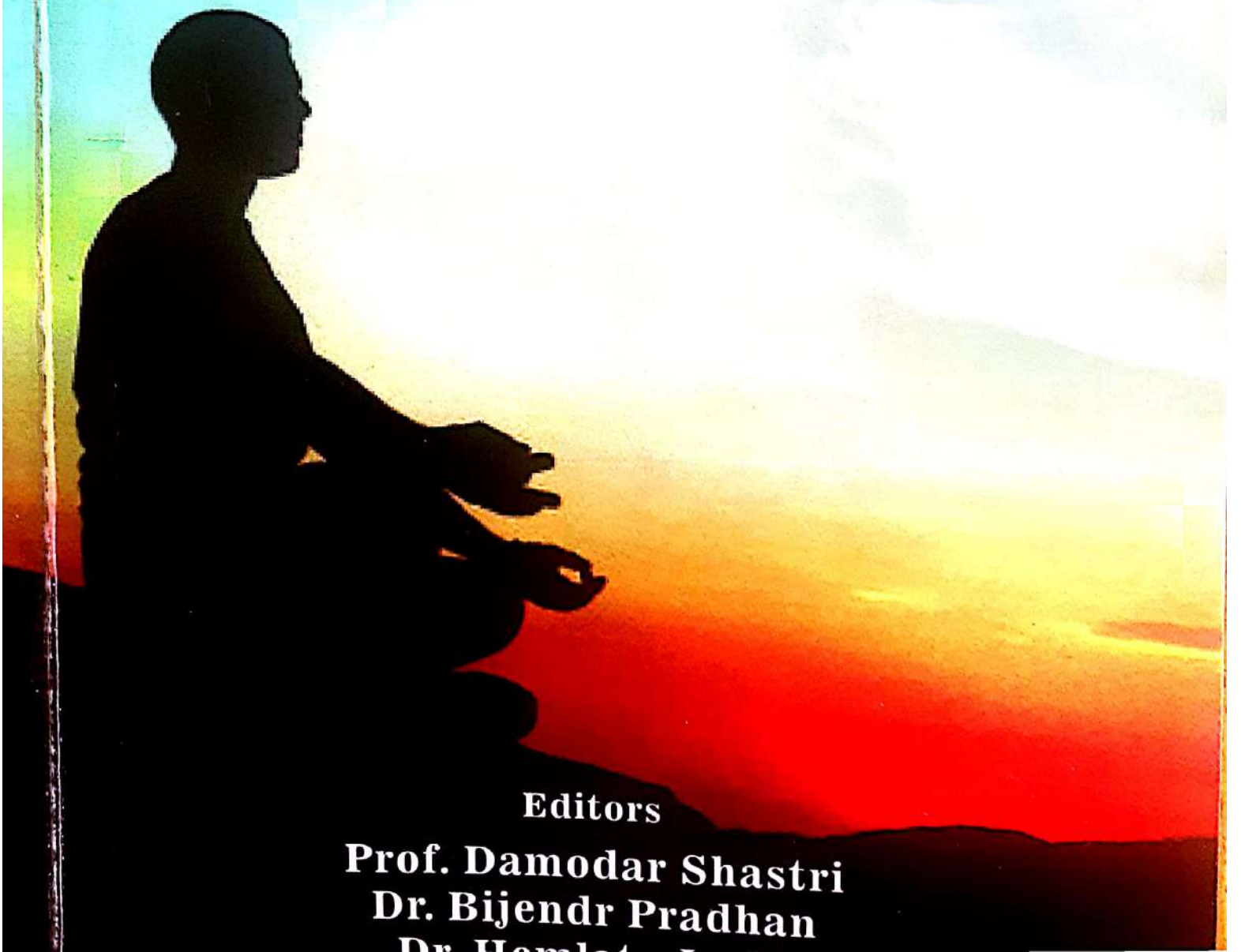

Editors
Prof. Damodar Shastri
Dr. Bijendr Pradhan
Dr. Hemlata

Various Dimensions of Social Culture

ISBN 978-93-83634-46-0

Editing Teem 2019

Editors: Prof. Damodar Shastri
Dr. Bijendra Pradhan
Dr. Hemlata Joshi

First Edition: September, 2019

Price: 350/-

Published by: Jain Vishva Bharati Institute
(Deemed University)
Ladnun-341306 (Rajasthan) India
www.jvbi.ac.in

Printed by: Nagar Printing Press, Kota

मूक–बधिर एवं सामान्य विद्यार्थियों की बुद्धि एवं सृजनात्मकताका तुलनात्मक अध्ययन

रेणु बारियाँ*

डॉ. गिरिराज भोजक**

*एम.एड. छात्रा, शिक्षा विभाग,

**सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग,
जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं (राजस्थान)

सारांश

सर्वविदित सत्य है कि प्राणी जगत में मानव सबसे श्रेष्ठ प्राणी है। वह समाज में रहकर शिक्षा द्वारा विकास करने की क्षमता रखता है क्योंकि शिक्षा मानव के विकास का आधार है। जे.एस. रॉस जैसे आदर्शवादियों के अनुसार "विद्यालय एक उद्यान है, शिक्षार्थी एक कोमल पौधा तथा शिक्षक एक सतर्क माली"। अतः जिस प्रकार पौधो के विकास के लिए माली आवश्यकतानुसार उसे कोड़ने, धूप दिखाने तथा उसकी सिंचाई की व्यवस्था करता है, उसी प्रकार शिक्षक को भी अपने छात्र के विकास के लिए शारीरिक भोजन, मानसिक भोजन तथा आत्मिक भोजन का प्रबंध करना चाहिए। विद्यालय में पढ़ने वाले बालकों में भी व्यक्तिगत भेद पाया जाता है। बाल विकास के अनुसार बालक को दो प्रकार का माना गया है सामान्य बालक व विशिष्ट बालक। सामान्य बालक औसत स्वास्थ्य होते है इनका बौद्धिक स्तर सामान्यतः 90 से 110 बुद्धि लब्धि सीमा के मध्य होता है। विशिष्ट बालकों में सामान्य बालकों की अपेक्षा कुछ असमानताएं तथा विशेषताएं पाई जाती है। इन बालकों में शारीरिक दोष अवश्य पाया जाता है परन्तु यह आवश्यक नहीं कि वे मानसिक दृष्टि से भी अयोग्य हो। इन बालको की मानसिक योग्यता प्रायः साधारण अथवा तीव्र होती है परन्तु दोष के कारण इनमें हीन भावना आ जाती है। ऐसे बालकों की शिक्षा की उचित व्यवस्था की अत्यन्त आवश्यकता होती है। शारीरिक रूप से विकलांग बालकों को सामान्य बालकों के समान शिक्षा देने से कोई लाभ नहीं होता। सामान्य विद्यालय की सामान्य शिक्षण विधियां, पाठ्यक्रम, पाठ्य सामग्री क्रियाएं एंव अन्य गतिविधियों के लिए जो माध्यम अपनाया जाता है। वही माध्यम मूक–बधिर बालकों के लिए नहीं अपनाया जा सकता है।

तकनीकी शब्दावली : सामान्य बालक, मूक बधिर बालक, बुद्धि एवं सृजनात्मकता, व्यक्तिगत भेद, समायोजन

परिचयात्मकपृष्ठभूमि

महाकवि तिरूवल्लुवर ने अपने ग्रंथ "तिरूक्कुरल" में मनुष्य के लिए शिक्षा का महत्त्व बताते हुए लिखा थारू

"कहलाते है, नेत्रयुत, जो है विद्यावान।
मुख पर रखते घाव दो, जो है अपठ अजान"।।

जे.एस. रॉस जैसे आदर्शवादियों के अनुसार "विद्यालय एक उद्यान है, शिक्षार्थी एक कोमल पौधा तथा शिक्षक एक सतर्क माली"। अतः जिस प्रकार पौधो के विकास के लिए माली आवश्यकतानुसार उसे कोड़ने, धूप दिखाने तथा उसकी सिंचाई की व्यवस्था करता है, उसी प्रकार शिक्षक को भी अपने छात्र के विकास के लिए शारीरिक भोजन, मानसिक भोजन (साहित्य, विज्ञान, कला आदि) तथा आत्मिक भोजन (अध्यात्म, मानव मूल्य, आचार–शास्त्र आदि) का प्रबंध करना चाहिए। सृष्टि के अभ्युदय से आज तक यह विशिष्टता रही है कि कोई भी दो प्राणी न तो समान होते है, और न ही वह समान व्यवहार करते है न ही उनकी समान शिक्षा होती है। विद्यालय में पढ़ने वाले बालकों में भी व्यक्तिगत भेद पाया जाता है।

विशिष्ट बालकों में सामान्य बालकों की अपेक्षा कुछ असमानताएं तथा विशेषताएं पाई जाती है। इनमें विभिन्नता की चरम सीमा वाले बालक विशिष्ट बालकों की श्रेणी में आते है। विशिष्ट बालकों को उनकी भिन्नता के आधार पर अनेक भागों में बांटा गया है। इनमें शारीरिक दृष्टि से विशिष्ट बालक आते है। इन बालकों में बहरे बालक, वाणी दोष से युक्त बालक, अन्धे बालक, विकलांग बालक आते है।

इन बालकों में शारीरिक दोष अवश्य पाया जाता है परन्तु यह आवश्यक नहीं कि वे मानसिक दृष्टि से भी अयोग्य हो। इन बालको की मानसिक योग्यता प्रायः साधारण अथवा तीव्र होती है परन्तु दोष के कारण इनमें हीन भावना आ जाती है। ऐसे बालको की शिक्षा की उचित व्यवस्था की अत्यन्त आवश्यकता होती है। इस अभिशाप की पीड़ा एक भुक्तभोगी ही जान सकता है या कुछ सीमा तक वह जान सकता है, जो इनके साथ रहा हो और इनके लिए जिसने काम किया हो। पर यह भी वास्तविकता है कि किसी एक अंग के न रहने से व्यक्ति एकदम बेकार नहीं हो जाता बल्कि सत्य यह है कि उसके दूसरे अंगों की शक्ति कानों बढ़ जाती है। प्रायः देखा गया है कि नेत्रहीनों की स्मरण शक्ति बहुत तेज होती है। मूक व्यक्ति के कान बहुत तेज होते हैं वर्षो बाद मिलने पर भी आवाज